

आद्याय एट

E.



आराध्यार्थ ३॥



राजावडे शंखोदन मंडल, धुळे आणि यशवंत चावण प्रतिष्ठान, मुंबई

१९६४



“Joint Project”
the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratisthan, Mumbai

(१)

श्रीदात्रारथेन सः॥ जपजय जग हं द्युषे दसारा॥ आनं गदहनं हं द्युषे निवे
 करा॥ त्रैमलो द्वजन कापरात्परा॥ जामो वरा निरोकरधीक्रा॥ १॥ तुम्याद्युम्या
 त्रं प्रवं द्ये॥ द्योद्यासील शयो नीपात्पर्दे॥ मायणं रक्षी लीक्रह्यां द्ये॥ जीतजांत
 भरीये द्ये॥ तेजीवविसरो निलुरे भर्तुर्द्वे द्वेषानि विषयां द्ये॥ द्वौ निमुक्त्वा
 निजपदातें॥ आहं जाति भुलोनि॥ बाहुविषय देवतां द्वानना॥ कुरंगे वेकी
 लम्जीवप्राणा॥ राहु विषद्युग्रे तां द्वारा प्रा॥ जां कुत्रों जाकुनि ही उविति
 ४॥ प्रियविषय देवतां पतंग॥ करीजा उलादहस्या॥ रसविषयेन सवेग॥ ५॥
 छातीलोनि मुक्त्वा प्राणां॥ ६॥ प्रियविषद्युग्रे लिंदभुलोन॥ द्रगका क्रोषी वेकी प्राणा॥ तें
 पां चहि विषय संपूर्ण॥ नोगीति जाणा मानवहा॥ ७॥ तुजविसरोनि यां श्रेष्ठामां॥ जी
 वभुलुर्देहादि धनकामां॥ त्यासीतामा क्षण द्युम्यां॥ द्वारथात्मजातसी॥ ९

(28)

७॥ यं व्रग्नो धाया वेऽर्तिं द्रथा ॥ द्वारयेंगमस्ति पले गंधी सूता ॥ याकरी वर्तले ते
तत्त्वता ॥ ऐद्रा जास्तां साहरा ॥८॥ गुरुसी वारपारी घाटार द्युनाथ ॥ हक्कमावधी
नीवालिकं जङ्गुत ॥ वह हद्वासीष्टग्रंथ ॥ छतीस सहस्रग्रंथ पै ॥९॥ समुद्राद्युसा
शोरग्रंथ ॥ तांत्रिलभ्यारसांगमधीनाश ॥१०॥ ऐसं जगीर शीतुन त्रुवार्षी ॥ पातंरि
से विजांजुकीने ॥११॥ सागरमाजी बुद्धे इन ॥ ज्ञाटिति सत्तेज मुक्ते वेंस्तुत ॥
द्वीपाधकासि सांपडे आपारथ ॥१२॥ परी पश्चात द्राक्षि प्रोटवांधे ॥१३॥ देवी उ
जन्नां व्यापर्वत ॥ परी जापयाणा ए रत्नवेशुधा शी ॥१४॥ सावहद्वासीष्टग्रंथ
शोर ॥ तांत्रिलभ्यार्थ ऐकाहा ॥१५॥ वाल्मीकि उवीष्टुतरे ॥ तेंशी परी सा
उहमी साहरे ॥ ओतेस्तपाति उवीष्टुवरे ॥ तरीतेंवक्रांहो सांगता ॥१६॥ परावेंउ
वीष्टजांणी कारा ॥ व्रहन करीति वलुर ॥ ओतेसंहेहधनुष्टवेउनिषोर ॥ प्र



(3)

ह्लांश्वरत्रारसोऽिती॥१॥ तोंवक्षिणनेंस्फुर्क्षिधनुष्यघेउन॥ शास्त्रांगं प्रतां
 क्रीतिवापा॥ प्रह्लांश्वरनिवारण॥ संदेह्यनुष्यछेदिते॥२॥ वक्तास्त्रपोरे
 वासावधान॥ द्रोणतेंउवीष्टुपतिसर्जन॥ तरीमधुमसीक्षेवेंउवीष्टु
 पो॥ घटुग्रावेउदेवते॥३॥ बद्धाम्भा तेडुम्भापान॥ तेंप्यावेंजाधीनक्षी
 तांजानुमान॥ अमरजाधीजायेउव्यं॥४॥ उन॥ परीतेश्वास्त्रज्ञांगीक्षीति
 ॥५॥ प्रेष्यमुखीवेंजीवन॥ तेउव्यं॥ उव्यतानक्षीजापा॥ यामि-वादुरोउंद्वापु
 ण॥ उवीष्टुक्रोणस्युगेत्यासी॥६॥ ग्रातमंगात्यालीलीप्रार्थन॥ तेपों
 आधीक्षेलेंस्नानहान॥ व्यासावेंउवीष्टुषुराण॥ उवीष्टुपुणिक्षेते॥७॥ दि
 ल्युंनैक्षेध्यपावन॥ यामिउवीष्टुस्युगेत्यक्रोण॥ वालिक्षाव्यस्युणउन॥
 उविष्टनक्षेसर्वथा॥८॥ व्याप्रम्भग्वर्मग्रहण॥ उव्ररकेश्वर्दद्कुठजा



2

३८

॥ हस्तीहंतम्यग्रंगपुणी ॥ इति क्रान्तिपापविश्रद्यते ॥ ॥ आत्मो ए
 व्राष्टवर्जनुसंधान ॥ यागरस्त्रांजनांरुचनंहन ॥ द्वौ द्विक्रष्टिराजीवनय
 न ॥ दोलताजालतेधवां ॥ ॥ श्रीरामस्तोमाहंत्रष्ट्वा ॥ मज्जतुम्हीनेताए
 धासी ॥ स्थानंगुरहेहासि ॥ आत्मप्रत्योपज्ञापेहं ॥ ॥ आत्मप्राप्तीविणसा
 धन ॥ तैसाच्चाक्षंवरगक्षसरिविण ॥ त्रीहीयेविणात्मप्रसदन ॥ जीवणंवी
 णसरिताजैसपि ॥ व्रीप्राप्तांविणात्मवर ॥ त्रीच्छाविविणाभादर ॥ व्रीइ
 दीयेविणाभावार ॥ अनावर ॥ त्रीभृत्याविणक्रामिनी ॥ व्री
 आविस्त्राविणरजनि ॥ तैसाच्चात्मप्राप्तीविणप्राप्ती ॥ वर्णनाउलेसंसरी
 ॥ ॥ आत्मप्राप्तिसीक्षारण ॥ धरावेश्रीगुरवेवरण ॥ उत्तर्वेविणाज्ञान
 कृष्णांतिहीसाधेनां ॥ ॥ पदार्थनदिसेनेत्रेविण ॥ मोउनवाटघालीतांजी



(h)

वर॥ परीमाविलानदेसुवर्ण॥ तोहप्पेनदेसर्वया॥ > वैजेयुरुद्गोदेसी
 साहर॥ आत्मजान्तजेउनिक्षरा उभेसापुटोनिरंतर॥ अद्देशत्रस्तिष्ठत
 से॥ अ॒ उरुद्गोवर्त्तयासि॒नावेदो॒प॒चाङ्गांसिप॒उल॒द्विउ॥ जन्मसरणा
 वेंसांक्तुडे॥ नसरेत्याक्षेत्रुपांते॥ > जासीनावेउरुद्गोवन्॥ तोजात्तरा
 चतुष्टीक्रक्ताप्रविण॥ साहित्यासंसुवहतुरुर्णा॥ परीतेंगत्ययामध्यपीया
 वें॥ तेणांवेलेंजीक्रीत्तन्॥ रामिवरयगदलान॥ परीयुरदास्यनावेडे
 अ॒॥ त्यावेंबंधनचुक्रेनांपे॥ अ॒जल्लृप्त्यावप्रत्यप॥ कायेवारावेंसावें
 तप॥ जैमेंविगतविधेवेंवरूप॥ योवनद्वायेजाक्तावे॥ > गम्भिधान्वे
 विग्राहनेत्र॥ अद्वातयावेंउम्भीर॥ कीथिनलुष्या वात्वविवार॥ की
 रम्पग्रहंत्यजावेंछाअ॒श्वपीक्राये कुबगोत्र॥ श्वाननेयोस्त्वानपवि

>

(6A)

त्र॥ जैसे कावे होषओत्र॥ श्रोत्रीनसि वेसर्वया॥ ४५॥ तैसे गुरुहृषे पविन्दे
नर॥ ते हैहासि प्रालै तैसे खर॥ सदा विषये ग्रापरीमादग॥ ग्रापपरन
ठके॥ ४६॥ उत्तमजन्म मनुष्य पावोन॥ तैश्चें साधावे जात्मज्ञान॥ ज्ञानहि
न ते मटपूर्ण॥ गुटनवैभोगीति॥ ४७॥ अरमुपति च वै कोल ऐ कोनि॥ मध्यासम्
इसुखववले मर्ति॥ वीश्वामि त्र ते दुर्लभार्नं द्वानि॥ ब्रह्मनं दनां प्रति बोले॥
अर्जगहं द्युरविकुब्जुष्टा
या सी उपद्युरीदिव्यज्ञान॥ जो ज्ञानं त
ब्रह्मं द्वीपां टवण॥ लीळावे वैधार वैज्ञान॥ ४८॥ ते वे रे उदोनि रसुनाथ
॥ जो व्रमठो इवास्वातान॥ तो वद्वि शासि साक्षां गतज्ञीत॥ ग्रारणां गतज्ञा
ल अस्य से॥ ४९॥ हृणो तन मनथनें सहि प्रान्य॥ श्रीवद्वि शासी ग्रारण॥ ऐ
मं एकतां ब्रह्मनं दन॥ हृदइं धरीराघवातें॥ ५०॥ हृणो जगहं द्युश्रीरामां

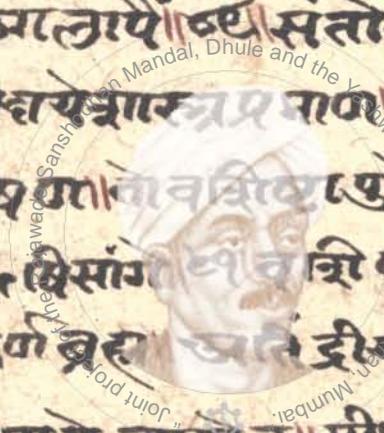
(6)

आवतार पुरवा उर्ध्वामां ॥ तुं मङ्गी हानं ह घन पर मात्मा ॥ तु जमी
 नायेऽपहेतुं ॥ ७ ॥ तुं जादि नारायण लिख कंक ॥ भोगे द्वज तु शत
 लभ्य ॥ वेद वा स्त्रां प उत्तेज एट ॥ तु श्रेष्ठ स्वरूप वर्णितां छ ॥ तु श्रेष्ठं नाम
 जपतां सादर ॥ गति ब्रह्म जात्यापाय गांवर ॥ मुख महि चांवणीतां सावर
 ॥ गरण मत्तुं आवामी ॥ ८ ॥ हे वभना वीषु जाकरीय थार्ये ॥ पा-वका
 सीराजादानसागत ॥ सागर जै यात रन करीत ॥ सरोवर गवें प्रीती ने ॥
 छेय ॥ वास्त्र स्पति मुक्रण से युसे विवार ॥ हीप प्रकाश इरुद्धि दीन कर ॥
 वकोगसि ह्मलेज अरि युक्त ॥ मज्जु त्रुत करा तुम्ही ॥ ९ ॥ द्रुष्टि तरु मागे दु
 र्बकादान ॥ जलद वात क्रासि द्युपत द्या जीवण ॥ वक्र वक्र स्वें दर्शन
 तरणी इक्की नवरहे ॥ १० ॥ प्रीती ने माता बाठ कासी द्युपात ॥ मीं तु श्रेष्ठ स

Digitized by
 the Jainawale Sahisudhan Mandir Trust and the
 Jainawale Sahisudhan Mandir Trust and the
 Jainawale Sahisudhan Mandir Trust and the
 Jainawale Sahisudhan Mandir Trust and the

SA

नपानकरीनस्त्या॥ क्रीत्वा त्रिकांतपरीमाणता॥ उदकजैसें ज्यापहवी॥ ७८॥
वनस्पतिसील्पोवसंत॥ मजुतुम्हीनी विवासमस्त॥ तैसाजोजगहुरर
युनाश॥ एउसीत्रारणआलाये॥ व्यासंतोद्वोतिब्रह्मनंदन॥ श्रीरामांसि
सन्मुखबैस्तुन॥ एउसंप्रवायेद्वास्त्रप्रभाव॥ माहुं वाक्यदि साधिधि॥ ८०॥
जोमायानियंताजगहुषामा॥ तोविषिष्युपुढ़ोउविकर्ण॥ चहुंवेदान्तें
जीवया॥ तेमाहुं वाक्यवत्त्रभैसांग॥ एवं त्रिष्टुपाश्रीराम॥ सर्वदृष्टुंगा
मारात्मा॥ सर्वभाष्यापक्रालुंषणब्रह्म॥ आत्मादीशवेगव्याप्त्या॥ जगांवरभा
ससक्त॥ हहुतुझे माहुमाये वारवेळ॥ मीथ्याभुत्तजैसेंस्थानल॥ सात्व
नहेसर्वदा॥ ८१॥ लुंगाति तसर्वाप्सित वता॥ जैसात्मवैधरींविंबलासवि
ता॥ क्रींकाशामाद्यागनीयाहतां॥ आतित्तजैसात्माकाशी॥ ८२॥ क्रींवा



(६)

शा माजी ध्यनिं उमरति ॥ क्रीं कं ठिंग डठति ॥ तरीयेघेन सोनि जासति ॥ तैसा
 सर्वभृतिं गच वालु ॥ क्रीं दर्पकं स्वरूपं ॥ दिसति परी मिथ्या रूपं ॥ तैसारा भा
 लु विश्वरूपं ॥ व्यषुनियं जालि स ॥ ८८ ॥ वीजामाजी तरुवरा ॥ क्रीं तंतु वाकीहि
 सवस्त्र ॥ क्रीं उद्धिंतरं गजापारा ॥ दिसु च मग्नुजकरी ॥ ८९ ॥ आनं तद्रम्हंगा
 व्यक्तो हि ॥ जीवसि भुरकं द्वादो ॥ निपारि ॥ आइ मदें भुत लिं देरि ॥ वीषयाच
 तैसर्वदा ॥ ९० ॥ मायेन्वे जावद्यदि ॥ तारा न भिगज गावे तटले पुरा ॥ क्रीं गंध
 वेनगर सदितरा ॥ रक्षीलें दिसेपरि मिथ्या ॥ ९१ ॥ वो उंबरी वें लेयों पुणी ॥ क्रीं
 स्वमी चंगज्यसी हृष्णना ॥ क्रीं वीक्रावा हुताशणा ॥ ज्वाळाज़हुतहि सति
 क ॥ क्रीं दर्पणां माजीहि धरहार ॥ क्रीं स्वगज गजाजीवं धा पुत्र ॥ मुक्तीकार
 जावें करुनिपात्र ॥ रात्रीमासधीत्से ॥ ९२ ॥ नयनं तिलपुत्र कीण भंधिं पद

६४
मिधरीलि॥ द्रौक्षित्यांतवीजुगीर्वीही॥ मसावेचेविवरेहें॥ अ॥ पांगुड्यांवे
आंतराढ्डी॥ सेवोंजाक्राम्भा वीसाउक्राटिली॥ प्रभंजनां श्रीवीधीप्रार्थि
ती॥ सप्तवदो लिकायेहोयो॥ अ॥ द्रौकुहुचेवाळेंवे भरलें॥ तेंहिवासोंप्रह
रांवाळेंवातलें॥ द्रौउरगतेपापाव्याप्तु॥ सीक्रतातंसुक्ररातिण्या॥ अ॥ द्रौ
क्राटोनिरीपावारेग॥ कर्लोरापित्रीसुरंग॥ विंव उवान्कलमाजीकाग॥ रेव
ठत्तेकायेवउहें॥ अ॥ हंसवर्जिराजस्त्य॥ तेसीमस्यानिश्चाभृत्॥ सप्तवद्रील
टदेंयशाथ॥ ब्रह्मांदेक्रान्नकर्वी॥ अ॥ नाएवंपरमविंहन॥ शोरशोरांसीनवले
युगो॥ त्रीयेमायेवीक्रायासांगेन॥ ऐ॥ असावधानस्त्रीरामां॥ ज्ञेगोंपायेंवा
स्थनीस्त्रिलृपूण॥ तोगोतमत्रष्पिपरमप्रविष॥ ल्यावेन्निष्ठअतिसुजात्य॥ गं
धीमामतयावें॥ अ॥ वसीवौंवेहावेंजाध्यायन॥ जाउवार्षीपरमनिपुन



तेणं व्रेते द्विष्य आनुषान॥ जाला प्रसन्नश्री विश्वां॥ ७५॥ मग बोले इंदि राना
 अ॥ प्रसन्न जाले अग्नि की ता॥ यावती तो ब्राह्मण बोलत॥ काये ते दै जाओ रा
 मां॥ ७०॥ गांधी त्रियो त्रि विक्री॥ मजुरुं हावें प्राण वै सी॥ तीवों ठेविलें सर्वं सी॥ म
 ज वेगं सिधा हुं हो॥ ७१॥ ऐ ब्रोलि हस्ती लाला यथा॥ माया पावर पदारण॥ तो
 इं सुणो निये तिवारण॥ उंति सपाहि नव॥ त्वया सी॥ ७२॥ ही सते ते ते आवर्ण
 आसत्पा॥ हें बीमा ये चेहर पय यार॥ जेसा गेर सर्वभासत॥ कां सुन्ती व्रेवी रज
 त जेसो॥ ७३॥ वीर बुंटत वीरो॥ आता प्रि भासे सावार॥ जैसे स्वप्री वें सैयदा
 पार॥ जागरति सीमि आते॥ ७४॥ गांधी त्रियो वै कुंटराय॥ उंमि आरूप सांगती मा
 गा॥ तरी मार्कुड़ि त्रि विकर॥ ब्रह्मां हिन्द्र भुल विले॥ ७५॥ तरी ते मज सूण भरी॥ स
 वै तिमां दावि नेत्री॥ हंसत से वै कुंठ विहरी॥ बोलें दै विले तथा वै॥ ७६॥ हरी त्स

Digitized by srujanika@gmail.com
 Banshoor Mandal, Dhule and the
 Jambuwantra Chavadi
 Print profile of the

४८
प्राणदेवोन॥ समुक्तजसीतुंभुलुन॥ तुशेक्षराविसहोत्रिप्राण॥ प्रगं क्रोण
सोउविर॥ ७७॥ तुशीभ्रंडोलसक्षमपति॥ पउसीलप्रहांआवति॥ प्रगगांधी
मृणेजगत्यति॥ वरनीश्चीतिदेहंमातों ७८॥ मीकासाविसबहुंतहोइन॥ ते
क्षेमजआठवदेषेउन॥ तुशेक्षरीनांवीरामसमरण॥ युउतिप्रेदंऐसावी॥ ७९॥
आवध्यासुणोनिजगन्तिवाप्त॥ जातासुउम्बुलुनांस॥ क्राहिंयेक्षजालेदि
वस॥ ऐदेहंसर्वाधाराधवा॥ ८०॥ ज्यापहवीतिमासंव्यात॥ गांधीराहेलफली
येसहेत॥ येक्षदामाध्यानंज्ञातेत्या॥ क्रायिज्ञातस्नानातें ८१॥ प्रवेश
तांगंगाजीवनी॥ प्रनांतक्षणोमायाजासुणी॥ प्रजदानंदाखरविवक्षयाली
क्रैसीक्षरांजीवनी॥ ८२॥ आघमर्षणक्षरीतांक्षासुणा॥ तोंमायेनेमाउठेंसिं
दन॥ गांधीसवाटेजातेमरण॥ येशातरणजाहाली॥ ८३॥ तोंपा तलेषेमदु



(8)

त॥तेहि प्राणकाटिलेतरीत॥ ये माया संसारीत॥ गांधीनेलातेष्वां ईते
 शंये मृजावनिंदास्ता॥ कुंपवादिं धारीति नेउन॥ आसीपत्रवनिंहीउठन॥
 तस्तं नीवांधीति॥ एव। इन्द्रिये वांते त्रप्राणीत॥ परीज्ञापणाउभाज्या
 एविअंत॥ मगतो जन्मलाद्यां रात्र पानित॥ व्रंट जन्मतपत्त्वे॥ ए
 पंवेविसवर्षे परीयंत॥ लौपुत्र राल बहुंत॥ वाटपाउनि आसंव्यात॥ मे
 लीसवेहि कुटं द्विंशी॥ ऊ॥ नानां नीत॥ हिंसाकरी॥ गौद्यास्युणजीविंसारी॥
 तांतेष्वां याउमहासारी॥ इवत्थं जाटले॥ माये बायेस्त्रीसुत॥ रेक्षं
 वैसवेवावचिंस्य॥ व्रंट जविवारी मनांत॥ होउनिविस्त येष्वानियां॥ ए॥
 रउकंठ जन्मासाहार॥ मूरोन्मिठे आतांसंसार॥ मगजातित होउ
 निरुगव्यार॥ देवादेवीहीउता॥ ऊ॥ आत्राक्षोर वृहेष्वापति॥ तांतेष्वीउ

७

(8A)

स्त्यपावरुन्नपति॥ यासीनाहिं पुत्रसंतति॥ मणप्रधानक्रीतिकीवार
॥५॥ मगाण्युं जादं इं प्राढदेउनि॥ श्रंगारहनियेवहास्तिनि॥ तों कंटजस्वेकं
मीं चापुगुनि॥ माद्यघातछीजाद्य स्माता॒ एभा॑ साहुवर्द्धेराज्यक्रोनि देखा॑॥
एविलेसकळलेका॑॥ घरींजेउं घातले सद्वलिका॑॥ सोयरेवेलेबद्धंतची॥
ष्ट्रा॑ येवेहिवस्तितेतिलेत्॥ येवेहिवाहेस्तियेकंटज॥ प्रधानआंगी
सेवव्रसमाज॥ पाठिंधां वतिरायवा॑ ए॥ आवदीयासीहराविलेंरागं द्य
गेयेउंनक्रामजमागं॥ प्रधान उत्तपहतिवगं॥ क्रोठं जातोल्लानोनियं॥६॥
तोंतेगविंत्रेअनामिका॑॥ परमउन्नतमध्यप्राग्नद्वा॑॥ तेवाटेसम्भरलेसक
छीका॑॥ कंटजस्तितेधवां ए॥ तेंहिं कंटजवोकरवीहासत्तरा॑॥ ह्यतानिषम
वेगांविंवाहुसोयरा॑॥ येणलोकन्नष्टविलेयेकस्तरा॑॥ नाहीक्रबलेक्रोन्हां



(१)

सी॥ त्यासक्रन्दावितदेवा॥ द्वयोहेगोष्कोलुंनक्षा॥ नाहीत्सीसक्रिलि
 का सीशा दरीनसाश्ये॥ तं प्रधानवंगी ईक्रीले॥ द्वयातिराज्यसमस्तवृ
 अविले॥ त्रिं दज्यासिमारोनिक्षाहरघातले॥ वीक्षणीचैसलेसमस्त॥ १७ श्री
 ईक्राण्डीलावाल्लाशी॥ द्वयेदहंतप्राये रीत॥ मागाज्ञिं प्रवेशसमस्त॥ ले
 क्रक्षीतिनगरीवे॥ १८॥ प्रधानां राजाधीक्रासी॥ क्रीषुरुषतेआवधारी॥
 नस्मजालेज्ञिनंभीतरी॥ चाक्षं रीत अली॥ १९॥ एमं त्रिंटजेंद्रविले॥ द्वयो
 थोरपायमज्जघडले॥ तेहुंत्यानेंसरधारवीले॥ वरीज्ञापणनिजेला॥ २०
 तोंज्ञानिदीरवातेवेळी॥ वरमांगिं रेउनिमगटली॥ त्रिंटजेहात्रफोर्ती॥ उ
 रिघातलीरवलुति॥ २१॥ तोंइक्षुरेगांधीक्राद्यपा॥ बाहेरनिघेहवकोउन॥ फोउ
 आठेतरतरण॥ वामांगासिदेवीले॥ २२॥ द्वयोमींगांधीक्राद्यपा॥ ज्याधर्वि

१०८

तकरीतांस्नान॥ व्रतिअस्तां प्राघमर्षण॥ दुःखेंहारुण्यनोगीलंगी ग्री॥ धर्म
र्यस्तेंमज्जांलीलें॥ वांगक्षयेनीतजन्मविलें॥ साहावरुषेंगज्यवेलें॥
लोकभृष्टविलेसर्वहि॥ वरत्पवावलेआसंरक्षना॥ जरीआस्थ्यनावें
स्वप्न॥ त्रीहेपोउतरतरल॥ त्रीरीतदनवीप्रतो॥ ७॥ विसरलातपझानुशान
॥ नाठकेसंध्याकेहाध्ययन॥ आश्रमास्त्रियालापरतोन॥ वीत्तार्थविंपतियेला
॥ दास्त्रीविनवीध्रतामालागुण॥ उपवासांगीकांमोबलाजन्॥ तोंतों
वीलापेब्रह्मण॥ सुपोमामूर्णि॥ नसागदे॥ ८॥ तोंगांधी-वाहुरुबंधुजाक्षमा
त॥ जालातिर्थकरीत॥ गांधीतयासीक्षमदत॥ सुपोहषबहूत द्रांजालसी॥ ९॥
तेणांसांगीतलेंवर्तमान॥ मजयेक्षयापघउलेंहारुण॥ कोरक्षदेवंसंउणी
वाळ-बीतेश्चन्तांदति॥ १॥ येक्षयेघरींस्यांदेतलेंजन्॥ मगम्यांत्यसीपुसी



लेंकर्तमान॥ तेद्युपातिव्रंटजमाहरयेउन॥ ग्रामआसुवाभ्रष्टविउठा॥ १५॥
 समस्तांचे घेउनिप्राण॥ मगतोगेलापैयेशुन॥ ऐसेंवापीनभरतेंडुर्ण॥ तेशें
 नोजनघउलेंमज्जा॥ १६॥ तोहोद्वजाद्यासंयुर्ण॥ दादशावर्षेकरीतांतीर्थिट्टा
 ॥ ऐसेंगुरुबंधुसंगुन॥ गेलापुढेवाणही॥ प्रवीतिपाहावयासमस्त
 ॥ गांधीजापणगेलातेशं॥ तोंग्रावद्या वुकांपथार्ण॥ प्रत्ययाआल्या सर्व
 ही॥ १७॥ आपणजेशेंजन्मलाहोतामाहुर॥ तेशेंवीघेतलाहोतासमावार
 ॥ तोंतेजानामि क्रसांगातिसमग्र॥ द्रुटजयेशेंजन्मलाहोता॥ १८॥ तेगेंसाव
 रुवेंगज्यक्रून॥ कोरकनगरध्रष्टउन॥ मगक्राकेंतोंउक्रून॥ गेलाने
 तोंक्रोंरिक्रेखा॥ १९॥ गांधीजाश्रमासआल्यापरतोन॥ घेतलेंशीतीवरीघा
 लुन॥ आतांवैंचेंक्रात्यपापण॥ गोलेंबुरोनरवरविं॥ २०॥ वांकेंक्रपाठ



10A

प्रादवीषिति॥ द्वयोर्मीगौतमवीष्विरव्यातजगति॥ मज्जैसीष्वउली
हेगति॥ कोणप्रतापहासाहे॥ १७ आसत्पञ्चीहृष्णावेंवहीते॥ तरीसर्वे
हीप्रत्ययप्रालें॥ जन्मकर्मदुष्टतगेलें॥ पाहोनिजालोंस्वनयनी॥ २८ सत्य
कीजासत्यपुरा॥ मज्जकोणमागे छउद्रुतुन॥ द्वोणा सीमिंजाउंडारठा
वेंवेंब्राष्टव्यमज्जातो॥ ३५ धांवंधां वंडहिरावरा॥ वैकुंठवासीयावृ
मङ्गवरा॥ पतितपावनसर्ववरा॥ ए तीवत्त्राज्जगहुरु॥ ३६ ताल्लाक
प्रगटलाजगजीवण॥ द्वयोरे वीसावधान॥ माझीमायापरमगहण॥
ब्रह्मांदिकांजातकी॥ ३७ तुंहृष्णासीसर्वे ज्ञजाणता॥ सत्यकीआसत्यमा
गासांगाजातां॥ बहूंकृषितवैकरितां॥ निर्वहसर्वथानकुंची॥ ३८ जे क
श्रीतिसर्वदाज्ञान॥ सांगतिमायालटविहृष्णान॥ तेहिमायेंतगेलेसीकोन





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com